अध्याय-22

भारत के संसाधन प्रदेश

(Resources Regions of the India)

संसाधन प्रदेशों का वर्गीकरण प्राकृतिक वातावरण के विभिन्न तत्त्वों, जैसे—भूमि या धरातलीय, स्थलाकृति एवं बनावट, धरातल की भूगर्भिक संरचना, मिट्टी, वनस्पति, खनिज, तापमान, वर्षा आदि कारकों की समानता के आधार पर किया जाता है। किसी भी क्षेत्र को एक संसाधन प्रदेश की सीमा में निर्धारित करने के लिए भौतिक वातावरण के इन कारकों की उपलब्धि के साथ-साथ सांस्कृतिक वातावरण के तत्त्वों, जैसे—फसल उत्पादन प्रतिरूप, सिंचाई, खनिजों का उत्पादन, औद्योगिक क्रियाओं, जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व आदि कारकों की समानता को भी ध्यान में रखा जाता है। इसलिए भारत को विभिन्न संसाधन प्रदेशों में बाँटने के लिए भौतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के विभिन्न कारकों को आधार माना गया है।

भारत के संसाधन प्रदेशों का वर्गीकरण सर्वप्रथम संसाधनों की उपलब्धता, उपयोग एवं सम्भावना के आधार पर निम्नलिखित भागों में किया गया है—

(1) गत्यात्मक संसाधन प्रदेश—इसके अन्तर्गत उन संसाधन प्रदेशों को सम्मिलित किया गया है, जहाँ औद्योगिक एवं प्राविधिक विकास का स्तर उच्च पाया जाता है। इनको पाँच उपभागों में विभाजित किया गया है—

(i) औद्योगिक तथा कृषि संसाधन प्रदेश,

(ii) कृषि, ऊर्जा तथा औद्योगिक संसाधन प्रदेश,

(iii) कृषि तथा उद्योग संसाधन प्रदेश,

(iv) कृषि तथा कृषि आधारित उद्योग संसाधन प्रदेश,

(v) उद्योग तथा वन संसाधन प्रदेश।

(2) उन्नतिशील संसाधन प्रदेश—इसके अन्तर्गत उन संसाधन प्रदेशों को सम्मिलित किया गया है, जहाँ विभिन्न संसाधन तो पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं लेकिन वहाँ तकनीकी का विकास अधिक नहीं हुआ है। अत: औद्योगिकरण की प्रक्रिया यहाँ मन्द गति से विकसित हो रही है। इस मुख्य प्रदेश को पाँच उप प्रदेशों में विभाजित किया गया है—

(i) खनिज एवं वन संसाधन प्रदेश,

(ii) कृषि, वन एवं सम्भावित ऊर्जा संसाधन प्रदेश,

(iii) कृषि, वन एवं खनिज संसाधन प्रदेश,

(iv) वन, खनिज एवं बागवानी कृषि संसाधन प्रदेश,

(1) व्यापारिक कृषि एवं ऊर्जा संसाधन प्रदेश।

(3) समस्यायुक्त संसाधन प्रदेश—भारत के उन संसाधन प्रदेशों को इसके अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है जहाँ जनसंख्या का भार संसाधनों की तुलना में अधिक है तथा प्राकृतिक संसाधनों द्वारा जनसंख्या के भार को वहन करना असम्भव हो गया है। इन क्षेत्रों में भविष्य में विकास की किसी भी प्रकार की सम्भावनाएँ नजर नहीं आती हैं। अत: यहाँ वर्तमान एवं भविष्य में समस्याओं का क्षेत्र बढ़ता ही जाएगा जिसके कारण इन्हें समस्यायुक्त संसाधन प्रदेश कहते हैं। इन्हें अग्रांकित उपभागों में विभाजित किया गया है—

(i) कृषि एवं कृषि उद्योग संसाधन प्रदेश,
(ii) कृषि तथा वन संसाधन प्रदेश,
(iii) कृषि तथा बागानी कृषि प्रदेश,
(iv) कृषि एवं वन संसाधन प्रदेश,
(v) कृषि, खनिज तथा उद्योग प्रदेश,
(vi) स्थानान्तरित पशुचारण संसाधन प्रदेश,
(vii) खनिज, वन तथा कृषि प्रदेश,
(viii) ऊर्जा तथा वन संसाधन प्रदेश,
(ix) वन संसाधन प्रदेश।

भारत का योजना आयोग प्राकृतिक वातावरण के विविध कारकों की उपलब्धता, उपयोग एवं सम्भावना के आधार पर पाँच प्रमुख एवं चौदह गौण संसाधन विकास प्रदेशों में संसाधन प्रदेशों का वर्गीकरण किया गया है—

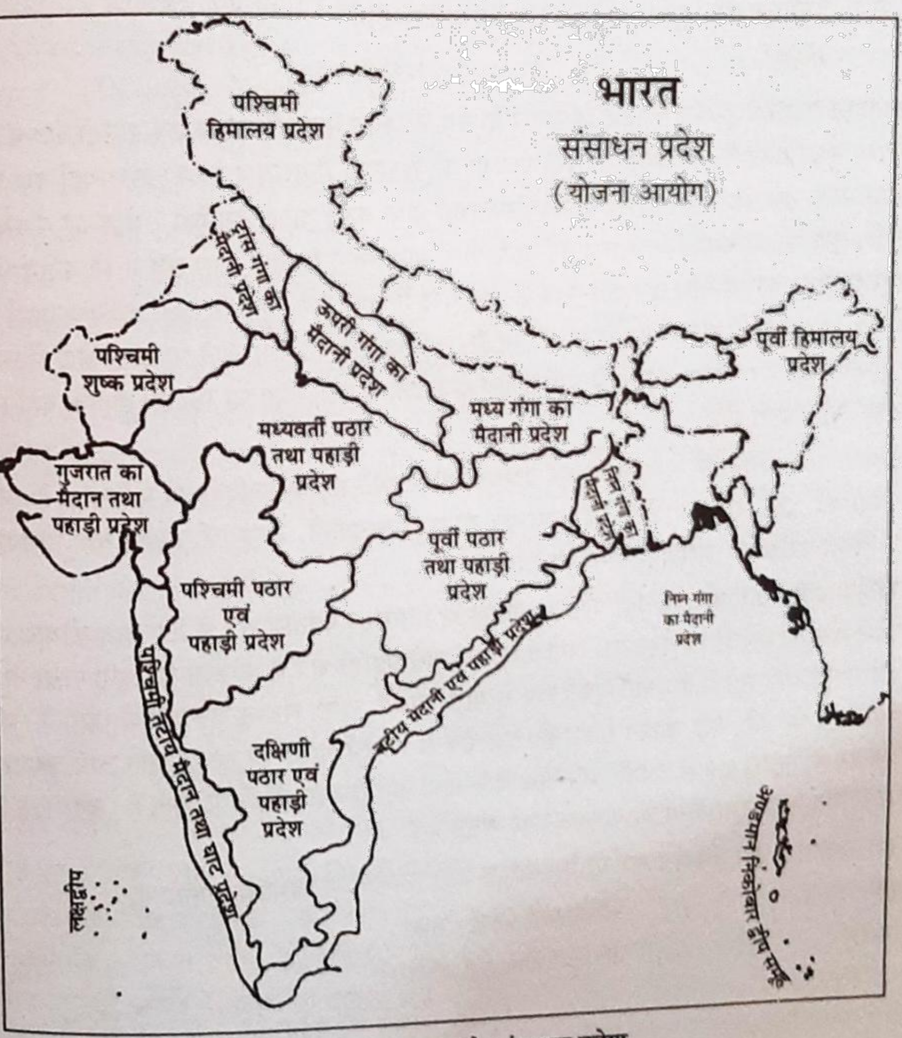

चित्र-22.1 : भारत के संसाधन प्रदेश

1. हिमालय एवं सम्बन्धित पहाड़ी संसाधन प्रदेश—इस प्रदेश का विस्तार मुख्य हिमालय पर्वत एवं उसके पास स्थित पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्रों तक पाया जाता है। योजना आयोग ने इसे दो उपभागों में बाँटा है—

(i) पश्चिमी हिमालय प्रदेश—इसका विस्तार लगभग 68 हजार वर्ग किमी. क्षेत्र में है। इसके अन्तर्गत हिमालय का पश्चिमी भाग सम्मिलित किया जाता है। संसाधनों की दृष्टि से इस क्षेत्र में पाये जाने वाले कोणधारी वन आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इन वनों से इमारती लकड़ी एवं कागज तथा दियासलाई उद्योग के लिए कच्चा माल प्राप्त होता है। कोणधारी वनों के अतिरिक्त चौड़ी पत्ती वाले

ओंक तथा नुकीली पत्ती वाले चीड़ एवं देवदार के वृक्ष भी यहाँ प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। हिमालय पर्वत के सम्पूर्ण वनों का 20 प्रतिशत भाग पंजाब-कुमाऊ क्षेत्र में स्थित है। इसलिए वन यहाँ के प्रमुख आर्थिक संसाधन हैं। जल विद्युत के विकास की सम्भावना यहाँ अधिक है, क्योंकि जल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। हिमालय की सम्भावित जल विद्युत शक्ति का 25% भाग केवल कश्मीर हिमालय में सम्भावित जल विद्युत का उत्पादन लगभग 25 लाख किलोवाट तक किया जा सकता है। चूना, पत्थर, बॉक्साइट, जिप्सम, डोलोमाइट, एन्थ्रेसाइट कोयला, शिवालिक श्रेणी से लोहा आदि खनिज यहाँ उपलब्ध हैं तथा सुगम स्थानों पर इनका खनन कार्य किया जा रहा है। पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्र होने के कारण यहाँ केवल समतल पठारी भूमि तथा नदी घाटियों में ही जनसंख्या पायी जाती है। कश्मीर एवं देहरादून में जनसंख्या का घनत्व सर्वाधिक है।

पश्चिमी हिमालय प्रदेश को योजना आयोग द्वारा चार छोटे उपप्रदेशों में विभाजित किया है—

(अ) उत्तर प्रदेश हिमालय क्षेत्र (ब) पंजाब हिमालय

(स) हिमाचल हिमालय (द) जम्मू कश्मीर हिमालय

(ii) पूर्वी हिमालय प्रदेश—इसका विस्तार हिमालय के पूर्व में स्थित मुख्य हिमालय एवं पहाड़ी क्षेत्र में पाया जाता है। समुद्र तट के नजदीक होने तथा मुख्य दक्षिणी-पश्चिमी मानसूनी हवाओं की दिशा के विपरीत होने के कारण यहाँ वर्षा पर्याप्त होती है। वर्षा का वार्षिक औसत 300 सेमी. तक रहता है। विश्व में सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करने वाला चेरापूँजी *(मेघालय में अब मासिनराम)* स्थान भी इसी क्षेत्र में स्थित है। वर्षा की अधिकता के कारण नदी घाटियों में बाढ़ आती रहती है। इस क्षेत्र में भी वनीय संसाधनों की प्रधानता है। असोम में उष्ण एवं शीतोष्ण कटिबन्धीय वन पाये जाते हैं। इन वनों में साल एवं ऑक के वृक्षों की प्रधानता है। पश्चिम बंगाल के हिमालयी क्षेत्र में लगभग 801 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में वन स्थित हैं। अधिक पूर्व की ओर जाने पर ढालू क्षेत्रों में ऊपर ओंक एवं स्प्रूस तथा नीचे बाँस के पेड़ पाये जाते हैं। वर्तमान समय में यहाँ वनीय क्षेत्र तेजी से कम होता जा रहा है। क्योंकि यहाँ रहने वाले लोग वनों को काटकर स्थानान्तरित कृषि करते हैं।

जल विद्युत उत्पादन की अधिकतम सम्भावना यहाँ ब्रह्मपुत्र तथा उसकी सहायक नदियों की घाटियों में है। सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र की जल विद्युत सम्भावना का 20% भाग इस क्षेत्र में है। वर्तमान समय में बारापानी, अग्जु, लीमाखोंग तथा उमियस नदियों की घाटी के तटीय भाग में जल विद्युत शक्ति का उत्पादन किया जा रहा है।

संसाधनों में खनिज प्राप्ति की दृष्टि से यहाँ पश्चिम बंगाल के हिमालय पर्वतीय क्षेत्र से लिग्नाइट कोयला, डोलोमाइट, खासी एवं जयंतिया पहाड़ियों से कोयला एवं शीशा युक्त रेत, नागालैण्ड एवं गारो पहाड़ी क्षेत्र से कोयला एवं चूना पत्थर के प्रुचर भण्डार पाये जाते हैं। यह सम्पूर्ण क्षेत्र पठारी एवं पहाड़ी है। यहाँ मुख्य रूप से गारो, खासी, नागा, संथाल जनजातियाँ रहती हैं। पश्चिमी बंगाल एवं असोम के पहाड़ी क्षेत्र में चाय के बड़े-बड़े बागान स्थित हैं। इस क्षेत्र से सम्पूर्ण भारत की 80 प्रतिशत चाय का उत्पादन किया जाता है। इसके अतिरिक्त मेघालय के पठारी क्षेत्र में नारंगी, अनन्नास जैसे फलों का उत्पादन भी किया जाता है। जनसंख्या अधिकतर समतल भागों एवं पठारी क्षेत्र में निर्मित सीढ़ीनुमा खेतों के पास निवास करती है।

भारत के योजना आयोग ने इस उपभाग को भी निम्नांकित छोटे उपक्षेत्रों में विभाजित किया है—

(अ) हिमालय उप प्रदेश—
- (i) अरुणाचल प्रदेश (नेफा)
- (ii) पश्चिमी बंगाल हिमालय

(ब) असम एवं सम्बन्धित पर्वतीय उप प्रदेश—
- (i) असम की पहाड़ियाँ
- (ii) नागालैण्ड की पहाड़ियाँ
- (iii) मणिपुर की पहाड़ियाँ
- (iv) त्रिपुरा की पहाड़ियाँ

(स) समतल उप प्रदेश—
- (i) ब्रह्मपुत्र एवं सोन घाटी
- (ii) पश्चिमी बंगाल हिमालयन समतलीय क्षेत्र

2. उत्तरी वृहत मैदानी प्रदेश—हिमालय पर्वत के दक्षिण में इसके लगभग समान्तर पूर्व से पश्चिम तक गंगा नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा लाई गयी मिट्टी के निक्षेप से निर्मित मैदानी भाग को उत्तरी वृहद मैदान कहते हैं। इसका विस्तार लगभग 5.5 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र में है तथा यहाँ भारत की लगभग एक-तिहाई जनसंख्या निवास करती है। अत: यह प्रदेश भारत का सबसे बड़ा क्षेत्र है, जो सघन बसा हुआ है। यहाँ नदियों द्वारा लाई गयी उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी पायी जाती है। अत: फसल उत्पादन की दृष्टि से भी इस मैदान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह मैदानी भाग समतल एवं निम्न उच्चावच युक्त है। सम्पूर्ण भारत के क्षेत्र के लगभग मैदानी भाग में पूर्व से पश्चिम की ओर कम होती जाती है। मैदान के पूर्वी भाग में गंगा नदी के डेल्टाई क्षेत्र में वर्षा का औसत 140 से 180 सेमी., मध्यवर्ती गंगा के मैदान में 100 से 150 सेमी., गंगा के ऊपरी मैदानी भाग में 80 से 100 सेमी. तथा सुदूर पश्चिम में राजस्थान में केवल 25 सेमी. वर्षा का वार्षिक औसत पाया जाता है। सम्पूर्ण मैदानी क्षेत्र में चरागाह एवं पतझड़ वनों की प्रधानता है। प्राकृतिक चरागाह राजस्थान में 8 हजार, हरियाणा में 80 हजार हैक्टेयर क्षेत्र पर फैले हुए हैं। इसके अतिरिक्त गंगा नदी के डेल्टाई क्षेत्र में मंग्रोव (दलदली) वनस्पति पायी जाती है। खनिज संसाधन यहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। गंगा मैदान के उत्तर-पश्चिम भाग में लोहा, चूना पत्थर, जिप्सम राजस्थान में ताँबा, कैल्साइट, काँच बालुका, बेन्टोनाइट, गंगा मैदान के मध्यवर्ती भाग में अभ्रक, डोलोमाइट, चीनी मिट्टी, मैदान के निचले पूर्वी भाग में कोयला के पर्याप्त भण्डार हैं। इसके अतिरिक्त शक्ति संसाधनों की दृष्टि से ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी का महत्त्व अधिक है। यहाँ पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस का वर्तमान में उत्पादन किया जा रहा है।

नदियों द्वारा निर्मित इस वृहत मैदानी भाग में पर्याप्त जल संसाधन उपलब्ध है। गंगा, यमुना, दोआब में नहरें बनाकर जल का सिंचाई के लिए उपयोग किया जाता है। नदियाँ प्रवाहित होने के कारण यहाँ भूमिगत जल भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है जिसका उपयोग कुएँ तथा नलकूप द्वारा सिंचाई के लिए किया जाता है। सतलज नदी पर भाखड़ा बाँध बनाकर एकत्रित जल का जल विद्युत के उत्पादन के लिए उपयोग किया जा रहा है। मैदान के मध्यवर्ती भाग में घाघरा, गंडक कोसी तथा निम्नवर्ती पूर्वी मैदानी भाग में दामोदर नदी के जल को बाँधों द्वारा रोककर जल विद्युत उत्पादन एवं सिंचाई के लिए उपयोग किया जाता है। फसल उत्पादन की दृष्टि से भी यह क्षेत्र बहुत विकसित है। यहाँ गेहूँ, गन्ना, चावल, कपास, मक्का, दालें, ज्वार, बाजरा, जूट आदि फसलों का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में किया जाता है। इस सम्पूर्ण मैदानी भाग में अनुकूल जलवायु, पर्याप्त जल एवं उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी के कारण सघन जनसंख्या निवास करती है। पश्चिमी भाग में राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र में जल की कमी के कारण न्यून जनसंख्या घनत्व पाया जाता है।

भारत के योजना आयोग ने वृहत मैदानी प्रदेश को प्राकृतिक वातावरण के कारकों की विभिन्नता के आधार पर पाँच संसाधन विकास प्रदेशों में विभाजित किया है—

(i) गंगा का निम्न मैदानी प्रदेश (The Lower Gangetic Plain Region)
(ii) गंगा का मध्यवर्ती मैदानी प्रदेश (The Middle Gangetic Plain Region)
(iii) गंगा नदी का ऊपरी मैदानी प्रदेश (The Upper Gangetic Plain Region)
(iv) गंगा तटीय मैदानी प्रदेश (The Trans Gangetic Plain Region)
(v) पश्चिमी शुष्क प्रदेश (The Western Dry Region)

3. प्रायद्वीपीय पठार तथा पहाड़ी प्रदेश—इस प्रदेश का विस्तार वृहत मैदानी क्षेत्र के दक्षिण में नीलगिरी की पहाड़ियों तक पाया जाता है। इसके अन्तर्गत अरावली पर्वत, छोटा नागपुर का पठार, मालवा का पठार, उड़ीसा की पहाड़ियाँ, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड, महादेव, सतपुड़ा की पहाड़ियाँ, नीलगिरी पहाड़ी क्षेत्र को सम्मिलित किया जाता है।

यह प्रदेश लगभग 15 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है। योजना आयोग द्वारा इसे चार संसाधन विकास प्रदेशों में विभाजित किया गया है—

(i) पश्चिमी पठारी एवं पहाड़ी प्रदेश (The Western Plateau and Hills Region)
(ii) मध्यवर्ती पठारी एवं पहाड़ी प्रदेश (The Central Plateau and Hills Region)
(iii) पूर्वी पठारी एवं पहाड़ी प्रदेश (The Eastern Plateau and Hills Region)
(iv) दक्षिणी पठारी एवं पहाड़ी प्रदेश (The Southern Plateau and Hills Region)

जलवायु की दृष्टि से सम्पूर्ण पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्र उष्ण कटिबन्धीय जलवायु प्रदेश के अन्तर्गत स्थित है। वर्षा की मात्रा पूर्व से पश्चिम तथा दक्षिण से उत्तर अलग-अलग पायी जाती है। इस प्रदेश के पश्चिमी भाग में 70 सेमी., मध्यवर्ती भाग में 60-100 सेमी., पूर्वी भाग में 120-170 सेमी., दक्षिणी भाग में 100 सेमी. एवं उत्तरी भाग में 50-100 सेमी. तक वर्षा का वार्षिक औसत पाया जाता है। तटवर्ती क्षेत्रों में अधिक वर्षा होती है। लेकिन आन्तरिक मध्यवर्ती क्षेत्र में वर्षा काऔसत कम होता जाता है। वर्षा की विभिन्नता के कारण वनस्पति में भी पर्याप्त विविधता पायी जाती है। मालवा के पठारी भाग में जो पश्चिम में स्थित है। साल, सागौन, शीशम एवं चन्दन के वृक्ष पाये जाते हैं। नीलगिरी पहाड़ी क्षेत्र में पतझड़ वनस्पति की प्रधानता है। पठारी क्षेत्र के पूर्वी भाग में स्थित साल, सागौन, बाँस एवं सवाई घास की प्रधानता है। भारत में खनिजों की उपलब्धि की दृष्टि से दक्षिणी पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्र धनी है। भारत में खनिजों की प्राप्ति का अधिकांश भाग इसी क्षेत्र से प्राप्त होता है। छोटा नागपुर का पठार जो इस प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है, खनिज उत्पादन एवं संचित भण्डार की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। सम्पूर्ण भारत में उत्पादित एवं संचित लौह अयस्क का 60 प्रतिशत कोयला का 66 प्रतिशत, डोलोमाइट का 65 प्रतिशत संचित भण्डार छोटा नागपुर के पठारी क्षेत्र में स्थित है। इनके अतिरिक्त यहाँ बॉक्साइट, चूना पत्थर एवं अभ्रक के भी पर्याप्त भण्डार संचित हैं। अत: यह क्षेत्र खनिजों का संग्रहालय कहलाता है। पूर्वी भाग में ही उड़ीसा की पहाड़ियाँ स्थित हैं। यहाँ के लौह अयस्क, ताँबा बॉक्साइट, जिप्सम, मैंगनीज आदि खनिजों का उत्खनन किया जा रहा है। मध्यवर्ती पठारी क्षेत्र में भी पर्याप्त खनिज भण्डार हैं। अरावली पहाड़ी क्षेत्र से सीसा-जस्ता, लौह अयस्क, मैंगनीज, चूना पत्थर, संगमरमर, बुन्देलखण्ड से संगमरमर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

मालवा के पठारी क्षेत्र से एस्बेस्टास, चूना पत्थर, बॉक्साइट, मैंगनीज, चीनी मिट्टी तथा विन्ध्यन प्रदेश से प्रचुर मात्रा में हीरे का उत्खनन किया जा रहा है। दक्षिण पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्र में सोना, चाँदी, लोहा, मैंगनीज एवं बॉक्साइट खनिजों का उत्खनन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त इस भाग में जिप्सम, चीनी मिट्टी, ग्रेफाइट, चूना पत्थर आदि खनिज पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं।

यह प्रदेश खनिजों के संचित भण्डार तथा उत्पादन दोनों दृष्टि से भारत में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहाँ जल विद्युत शक्ति की उत्पादन की सम्भावना अधिक है। चम्बल बेसिन में लगभग एक लाख किलोवाट विद्युत उत्पादन की सम्भावना है। इसके अतिरिक्त नदी के जल द्वारा 6 लाख हैक्टेयर भूमि की सिंचाई की जा सकती है। छत्तीसगढ़ बेसिन, बस्तर के पठारी क्षेत्र तथा कावेरी एवं तुंगभद्रा नदियों द्वारा प्राप्त जल से लगभग 90 किलोवाट का उत्पादन किया जा सकता है। कृषि उत्पादन की दृष्टि से यहाँ कपास की फसल का अधिक महत्त्व है। यहाँ लावा द्वारा निर्मित काली मिट्टी की प्रधानता है जिसमें कपास का उत्पादन होता है। लावा मिट्टी की प्रधानता महाराष्ट्र, गुजरात एवं कर्नाटक के उत्तरी भाग हैं। अत: कपास का अधिकतम उत्पादन भी इसी क्षेत्र में होता है। पूर्वी भाग में जलोढ़ मिट्टी की प्रधानता है, जहाँ चावल का उत्पादन होता है। मध्यवर्ती भाग में लाल मिट्टी पायी जाती है। यहाँ गेहूँ, ज्वार-बाजरा आदि का उत्पादन होता है। नीलगिरी पहाड़ी क्षेत्र में चाय के छोटे-छोटे बागान पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त दक्षिणी भाग में गन्ना, कपास तथा ज्वार-बाजरा का उत्पादन किया जाता है। तटीय क्षेत्र, नदी घाटियों तथा औद्योगिक क्षेत्रों में अधिक जनसंख्या निवास करती है। इसके विपरीत पठारी क्षेत्र में न्यून जनसंख्या घनत्व पाया जाता है।

4. पश्चिमी तटीय प्रदेश—दक्षिणी पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्र के पश्चिम में उत्तर में मुम्बई से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी अन्तरीप तक स्थित समुद्र तटीय क्षेत्र को पश्चिमी तटीय प्रदेश कहते हैं। अत: इसका विस्तार गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल आदि राज्यों के तटीय क्षेत्रों तक है। भारत के योजना आयोग ने इस प्रदेश को दो संसाधन विकास प्रदेशों में विभाजित किया है—

(i) पश्चिमी तटीय मैदान एवं पहाड़ी प्रदेश,

(ii) गुजरात का मैदानी एवं पहाड़ी प्रदेश

सम्पूर्ण पश्चिमी तटीय प्रदेश लगभग एक लाख वर्ग किमी. क्षेत्र पर फैला हुआ है। यहाँ लगभग 6 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। तटीय मैदान एवं पहाड़ी प्रदेश समुद्र के समीप स्थित होने के कारण पर्याप्त वर्षा प्राप्त करता है। यहाँ वर्षा का औसत 300 सेमी. से भी अधिक रहता है। अत: पर्याप्त वर्षा, समुद्री सम जलवायु तथा तटीय उपजाऊ भूमि के कारण यहाँ जनसंख्या सघन रूप में बसी हुई है। खनिजों की दृष्टि से गोवा लोहा अयस्क उत्पादन में भारत में अग्रणी स्थान रखता है। यहाँ तटीय क्षेत्र में लगभग 8000 लाख मीटर टन लौह अयस्क भण्डार हैं। मैंगनीज खनिज की दृष्टि से कर्नाटक का तटीय क्षेत्र महत्त्वपूर्ण है। यहाँ लगभग 10 लाख मीटर टन

मैंगनीज के भण्डार हैं। तटीय क्षेत्र में जल विद्युत उत्पादन की सम्भावना भी अधिक है। यहाँ एक लाख हैक्टेयर भूमि पर प्राकृतिक चारागाह क्षेत्र फैला हुआ है। धरातलीय जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। अतः सिंचाई एवं जल विद्युत की प्रचुर सम्भावना विद्यमान है। फसल उत्पादन की दृष्टि से यहाँ चावल, विभिन्न मसाले तथा नारियल के पेड़ उगाये जाते हैं। इस क्षेत्र के कच्छ प्रायद्वीप में चूना पत्थर, बॉक्साइट, लिग्नाइट, अंकलेश्वर से पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस का वर्तमान में उत्पादन हो रहा है। चीनी मिट्टी, मोनोजाइट, सिरकोन रेत, नमक आदि खनिजों का पर्याप्त भण्डार यहाँ संचित है। तटीय क्षेत्र के जलीय भाग से मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। सम्पूर्ण तटीय प्रदेश सम जलवायु उपजाऊ तटीय भूमि, मछली व्यवसाय के कारण सघन बसा हुआ है।

5. पूर्वी तटीय मैदान—प्रदेश का विस्तार दक्षिण पठारी एवं पहाड़ी प्रदेश के पूर्वी भाग के उत्तर में बालासोर से दक्षिण में कन्याकुमारी अन्तरीप तक बंगाल की खाड़ी के तटीय क्षेत्र में पाया जाता है। पूर्वी तटीय प्रदेश का क्षेत्रफल लगभग 2 लाख वर्ग किमी. है। तटीय स्थिति होने के कारण यहाँ पर्याप्त वर्षा होती है। वर्षा का औसत लगभग 80 से 120 सेमी. तक पाया जाता है लेकिन उड़ीसा के तटीय क्षेत्र में 160 सेमी. से भी अधिक वर्षा होती है। तटीय स्थिति के कारण यहाँ सम जलवायु पायी जाती है। पश्चिमी भाग की अधिकतर नदियाँ पश्चिम से पूर्व में बहती हुई बंगाल की खाड़ी में डेल्टा बनाकर गिरती हैं। अतः यहाँ नदियों द्वारा लाई गई जलोढ़ मिट्टी का जमाव पाया जाता है। कृष्णा, कावेरी, गोदावरी प्रमुख नदियाँ हैं जो जलोढ़ मिट्टी युक्त डेल्टाओं का निर्माण करती हैं। पर्याप्त जल उपजाऊ मिट्टी के कारण यहाँ चावल का उत्पादन किया जाता है। तटीय क्षेत्र के निवासियों का प्रमुख आर्थिक व्यवसाय नमक बनाना एवं मछलियाँ पकड़ना है। खनिजों की दृष्टि से यहाँ कन्याकुमारी में मोनोजाइट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। चीनी मिट्टी, चूना पत्थर, मैग्नेशियम के पर्याप्त भण्डार हैं। तमिलनाडु के तटीय क्षेत्र में नदी तट पर बाँध बनाकर नहरें बनायी गयी हैं जिनसे 80 लाख हैक्टेयर भूमि सिंचित होती है। आन्ध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्र में नहरों द्वारा 2 लाख हैक्टेयर भूमि की सिंचाई की जा सकती है। मछली पकड़ने की सुविधा, सम जलवायु, उपजाऊ मिट्टी की प्राप्ति के कारण यह प्रदेश सघन बसा हुआ है।

द्वीप समूह—भारत में बंगाल की खाड़ी में स्थित अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह तथा अरब सागर में स्थित लक्षद्वीप, मिनीकाय और अमीनीद्वीप समूहों को एक अलग संसाधन प्रदेश में रखा जा सकता है। इन द्वीपीय क्षेत्रों में उष्ण कटिबन्धीय जलवायु की प्रधानता है। अतः यहाँ उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन, नारियल एवं ताड़ के वृक्ष बहुतायत में पाये जाते हैं। यहाँ से प्राप्त वनों में थरबल, वुड़, चुगलाम, पड़ाके वृक्षों की मांग यूरोपीय क्षेत्र में पर्याप्त है। इसलिए इन वृक्षों को काटकर इनकी लकड़ी यूरोपीय देशों में निर्यात कर दी जाती है। द्वीपीय क्षेत्र में वन एवं समुद्री जल से प्राप्त संसाधन प्रमुख आर्थिक संसाधन हैं। इसके अतिरिक्त क्रोमाइट, ताँबा, लोहा एवं कुछ भाग में कोयला भी यहाँ पाया जाता है। उष्ण कटिबन्धीय जलवायु, वनों की सघनता के कारण जनसंख्या का घनत्व यहाँ कम पाया जाता है।

❑

Disclaimer: This study material has been taken from the books and created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it.